अस्पताल जाने से डरते हैं “वे”

पहला मामला: रौशनी (बदला हुआ नाम) की त्वचा पर इन्फेक्शन हो गया था। अपनी अलग पहचान के चलते वह सरकारी अस्पताल नहीं जाना चाहती थी। उसने शहर के एक बड़े निजी अस्पताल जाने की राह चुनी। लेकिन निजी अस्पताल के रिसेप्शन से ही उसे डॉक्टर के उपलब्ध नहीं होने और वहां से चले जाने को कहा गया। जबकि वह समय (अपोइन्टमेंट) लेकर गई थी। ऐसा व्यवहार उसके साथ बार बार हुआ। रौशनी एक ट्रांसजेंडर है।

दूसरा मामला: शलभ (बदला हुआ नाम) के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। अपने ही रूम मेट के हाथों यौन हिंसा का शिकार होने के बाद वह उदयपुर के एक नामी अस्पताल में गया। इलाज के दौरान उसने पहली बार डॉक्टर के सामने अपनी लैंगिक पहचान बताई। डॉक्टर ने एक कुटिल हंसी के साथ नर्सिंग स्टाफ के सामने इतने “असभ्य” प्रश्न पूछे जैसे सब कुछ उसकी इच्छा से ही हुआ हो ! शलभ को इतनी ज़्यादा ग्लानि हुई कि उस रात उसने आत्म हत्या करने की कोशिश की। शलभ उदयपुर में किराये का कमरा लेकर रहता है और उसके माता पिता अन्य शहर में टीचर हैं।

तीसरा मामला: भावना (बदला हुआ नाम) को लड़कों की तरह रहना पसंद है। उसके परिजनों ने कई बार उसकी बुरी तरह से पिटाई की और उस पर~~उसे~~ औरतों की तरह रहने का दबाव बनाया। एक डॉक्टर ने भावना को “लड़की” बनाने के नाम पर २~~2~~ लाख रुपये ऐंठ लिए। भावना अपने परिजनों को नहीं समझा पा रही थी कि उसे शरीर ज़रूर औरत का मिला है मगर उसकी भावनाएं पुरुषों जैसी हैं। हद तो तब हो गई जब अस्पताल की एक नर्स ने उसकी माँ को सलाह दी कि अगर भावना किसी पुरुष के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाये तो वह फिर से “लड़की” बन जाएगी !!

रौशनी, शलभ और भावना किसी अन्य ग्रह के लोग नहीं हैं। वे आप और हम जैसे इसी दुनिया के सामान्य नागरिक हैं। अपनी अलग लैंगिक पहचान और रूचि के चलते उन्हें समाज और सेवा प्रदाताओं के तानों और भेदभाव से गुज़रना पड़ता है। हाल के वर्षों में, एलजीबीटीक्यू समुदाय के अधिकारों को पहचानने और उनकी पुष्टि करने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। हालाँकि, कई एलजीबीटीक्यू व्यक्तियों को अभी भी स्वास्थ्य सेवा चाहने के दौरान चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, खासकर मानसिक और शारीरिक मुद्दों के लिए। इस के पीछे कई जटिल कारण हैं, जिनमें भेदभाव, कलंक और स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों के भीतर समझ की कमी से संबंधित चिंताएँ शामिल हैं। कई बार डॉक्टर भी पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर उनका इलाज करने से मना कर देते हैं। एलजीबीटीक्यू समुदाय के लोग हमेशा अपनी पहचान उजागर होने के तनाव, समाज के लिए "कलंक" मानने की भावना और होने वाले भेदभाव से भयभीत रहते हैं। ये तनाव अन्य लोगों की अपेक्षा इस समुदाय में ज़्यादा है।

कौन है एलजीबीटीक्यू

वे सभी व्यक्ति, जिनकी लैंगिक पहचान और अभिव्यक्ति सामाजिक बायनरी (महिला और पुरुष) और उसके "सामाजिक" मापदंडों से मेल नहीं खाती, वे सभी एलजीबीटीक्यू समुदाय के लोग कहे जाते हैं। इन में लेस्बियन, गे, बाईसेक्सुअल, ट्रांसजेंडर, क्वीर, असेक्सुअल आदि शामिल हैं। इन सभी में और कई श्रेणियां हैं जो उनके व्यवहार के आधार पर वर्गीकृत की गयी हैं।

स्वास्थ्य और चिकित्सा सेवाओं में एलजीबीटीक्यू समुदाय को होने वाली असुविधा में योगदान देने वाला एक कारक इन्हें "समाज के लिए कलंक" मानना है। दशकों तक, एलजीबीटीक्यू होने को "अप्राकृतिक" माना गया और चिकित्सा पेशेवरों ने इस रूढ़िवादिता को बनाए रखने में भूमिका निभाई। भारतीय चिकित्सा की कई किताबों में आज भी इसे एक "बीमारी" के तौर पर परिभाषित किया गया है और "हार्मोन सम्बन्धी इलाज" की सलाह दी गयी है। यद्यपि अब इसे बदलने की आवाजें जोर शोर से उठ रही हैं किन्तु फिर भी यह दृष्टिकोण कहीं न कहीं स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं की सोच को प्रभावित अवश्य करता है। कुछ स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के पास "एलजीबीटीक्यू समुदाय के साथ कैसे पेश आयें"- जैसे प्रशिक्षण का अभाव होता है। एलजीबीटीक्यू व्यक्तियों की स्वास्थ्य चिंताओं और जरूरतों के बारे में समझ की कमी के परिणामस्वरूप अनजाने में असंवेदनशीलता या अज्ञानता हो सकती है, जो उन्हें देखभाल लेने से रोक सकती है।

एलजीबीटीक्यू समुदाय के खिलाफ भेदभाव और पूर्वाग्रह, जिसे कभी-कभी हेटेरोनॉर्मेटिविटी या सिस्नॉर्मेटिविटी कहा जाता है, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं सहित समाज के विभिन्न पक्षों में जारी है। निर्णय का डर, असंवेदनशीलता, या यहां तक कि यौन अभिविन्यास (सेक्स ओरियेंटेशन) या लैंगिक पहचान के आधार पर इलाज या सलाह से इनकार करना व्यक्तियों को आवश्यक सहायता मांगने से हतोत्साहित करता है।

एलजीबीटीक्यू समुदाय को अपनी स्वास्थ्य जानकारी की गोपनीयता के बारे में चिंताएँ होती हैं। कुछ मामलों में, परिवार के सदस्यों, नियोक्ताओं या अन्य लोगों के लिए "बाहर" होने का डर मानसिक और इलाज में एक महत्वपूर्ण बाधा होता है। किन्तु कई अस्पतालों में "गोपनीयता" की नीति नहीं होने के कारण इनकी पहचान इनके परिवार या कार्यस्थल या समाज तक पहुंच जाती है। जिसके बाद इन पर हिंसा होना आम बात है। कई डॉक्टर इसे आज भी बीमारी मानते हैं और समलैंगिकता खत्म करने के लिए अलग-अलग थैरेपी की सलाह देते हैं। जबकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार समलैंगिकता कोई बीमारी नहीं है।

एलजीबीटीक्यू समुदाय के लोगों में आत्मविश्वास में कमी आना, अवसाद में चले जाना और खुद को नुकसान पहुंचाने की प्रवृतियां इन चीज़ों से बढ़ती हैं। ये लोग अपने साथियों और पारिवारिक सदस्यों से यौनिक हिंसा के भी सबसे ज़्यादा शिकार होते हैं।

आत्महत्या के हैं सबसे ज़्यादा मामले

इन्डियन जर्नल और साइकोलॉजिकल साइन्सेज़ के अनुसार, भारत में ट्रांसजेंडर लोगों में से ३१% लोग आत्महत्या कर लेते हैं। इनमे से ५०% ने अपने २०वें जन्मदिन से पहले कम-से-कम एक बार आत्महत्या की कोशिश की होती है। नाज़ फाउंडेशन और सेफ एक्स्सेस द्वारा देश के अलग अलग राज्यों में किये एक सर्वे के अनुसार २६% एलजीबीटीक्यू समुदाय के लोगों को पहचान उजागर होने के बाद डॉक्टर ने सेवाएं देने से मना कर दिया। जबकि भारत के संविधान के अनुसार प्रत्येक भारतीय को उचित

स्वास्थ्य सेवा लेने का मौलिक अधिकार मिला हुआ है। सर्वे के अनुसार ५२% लोग अस्पताल तक जाने में भी डरते हैं। इनमें अधिकांश युवा वर्ग के लोग हैं, जिन्हें अपनी पहचान उजागर होने या परिवार को पता चलने की स्थिति में बदनामी का डर सताता है।

असमानताओं को दूर करने के लिए क्या करें डॉक्टर

एलजीबीटीक्यू व्यक्तियों को स्वास्थ्य देखभाल की मांग करते समय महसूस होने वाली असुविधा को दूर करने के लिए, यह जरूरी है कि स्वास्थ्य सेवा प्रदाता और सिस्टम समावेशी और सामाजिक रूप से सक्षम वातावरण बनाने की दिशा में कदम उठाएं। इसमें स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए बातचीत कौशल विकास प्रशिक्षण, एलजीबीटीक्यू-समावेशी नीतियों का कार्यान्वयन और एलजीबीटीक्यू समुदाय के भीतर विश्वास बनाने के प्रयास शामिल हैं। भेदभाव, कलंक और अज्ञानता को खत्म करने के लिए सक्रिय रूप से काम करके, स्वास्थ्य सेवा प्रदाता बेहतर परिवेश निर्माण में योगदान कर सकते हैं जहां सभी व्यक्ति, अपनी लैंगिक पहचान की परवाह किए बिना, स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लेने में सम्मानित और बेहतर महसूस करें.

- एलजीबीटीक्यू समुदाय के लोगों का इलाज करते समय डॉक्टर्स पूर्वाग्रह से ग्रसित नहीं हों।
- उनकी गोपनीयता का सम्मान करें। आपके अस्पताल में किसी भी रोगी की पहचान, बीमारी और उसके इलाज सम्बन्धी गोपनीयता को लेकर नीति बनाएं।
- पेशेंट हिस्ट्री लेते समय संवेदनशीलता रखें।
- अपने स्टाफ को प्रशिक्षण दें कि वे संवेदनशील व्यवहार करें और हंसी मज़ाक ना बनाएं। खासकर ट्रांसजेंडर रोगियों को सम्मानजनक और सकारात्मक देखभाल प्रदान करने पर कर्मचारियों को प्रशिक्षित करें।
- ज़ीरो टोलरेंस नीति अपनाएं। गैर-भेदभाव वाली नीतियों को विकसित और कार्यान्वित करें जिसमें स्पष्ट रूप से यौन अभिविन्यास, लैंगिक पहचान और अभिव्यक्ति शामिल हो।
- हर व्यक्ति को पूरे इलाज का हक है। उनका पूरा इलाज करें।
- लैंगिक पहचान के बारे में असहज होने वाले प्रश्न नहीं पूछें। इलाज के दौरान घिसी पीटी बातें जैसे "अरे, आप तो औरत जैसे दिखते हो" या "आप इतनी सुन्दर महिला हैं फिर लेस्बियन कैसे हैं" जैसे वाक्य ना बोलें।
- अपने अस्पताल के माहौल को सभी के लिए सुरक्षित बनाएं।
- जेंडर न्यूट्रल शौचालय बनाएं।
- समावेशी साइनेज और संचार लागू करें जो विविध लैंगिक पहचान को स्वीकार करता हो।

- मरीजों को रजिस्ट्रेशन फॉर्म और स्वास्थ्य रिकॉर्ड में अपना पसंदीदा नाम और लैंगिक पहचान लिखने की अनुमति दें।
- एलजीबीटीक्यू स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने वाले पोस्टर और शैक्षिक सामग्री प्रदर्शित करें।
- एलजीबीटीक्यू-संबंधित देखभाल के साथ अपने अनुभवों पर फीडबैक प्रदान करने के लिए रोगियों के लिए एक तंत्र स्थापित करें।

लेख: ओम (अर्बन95 टीम सदस्य; उदयपुर)